लोभ सबकुछ नाश करने वाला तत्त्व है : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 15 जून।

युवाचार्य महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि दो मित्रों में प्रेम है अगर क्रोध होता है तो वह प्रेम का नाश कर देता है अर्थात प्रेम का नाश करने वाला क्रोध है। विनम्रता का नाश करने वाला अहंकार होता है। माया से भी मैत्री या मित्रता का नाश हो जाता है। जब एक दूसरे में माया हो जाती है, अविश्वास हो जाता है तो मैत्री खत्म हो जाती है। लोभ ऐसा तत्व है जो सबकुछ नाश करने वाला है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि 'उपशम' अथार्त हर परिस्थिति में सम रहने की साधना के संकल्प द्वारा क्रोध का नाश किया जा सकता है, मृदुता के प्रयोग के द्वारा अहंकार को जीता जा सकता है और ऋजुता के संकल्प अर्थात ऋजुता के अभ्यास के द्वारा माया को जीता जा सकता है। संतोष के अभ्यास के द्वारा लोभ को जीतने का प्रयास करना चाहिए।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि लोभ को जीतने के लिए संतोष करना होता है उन्होंने यह भी कहा कि संतोष सब जगह नहीं करना चाहिए। कहीं संतोष और कहीं असंतोश भी करना होता है। तीन बातों में संतोश करो स्वदार संतोश, भोजन में संतोश और धन की भी ज्यादा आकांक्षा नहीं रखनी चाहिए। धन में भी संतोश करना चाहिए। उन्होंने तीन बातों में संतोष नहीं रखने की चर्चा करते हुए कहा कि ज्ञान के अर्जन में संतोश नहीं करना चाहिए और आगे से आगे ज्ञान को प्राप्त करते रहना चाहिए। जप करना, भगवान का नाम लेना उसमें संतोश नहीं करना चाहिए।

- अशोक सियोल

9982 903 770